मालवी

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

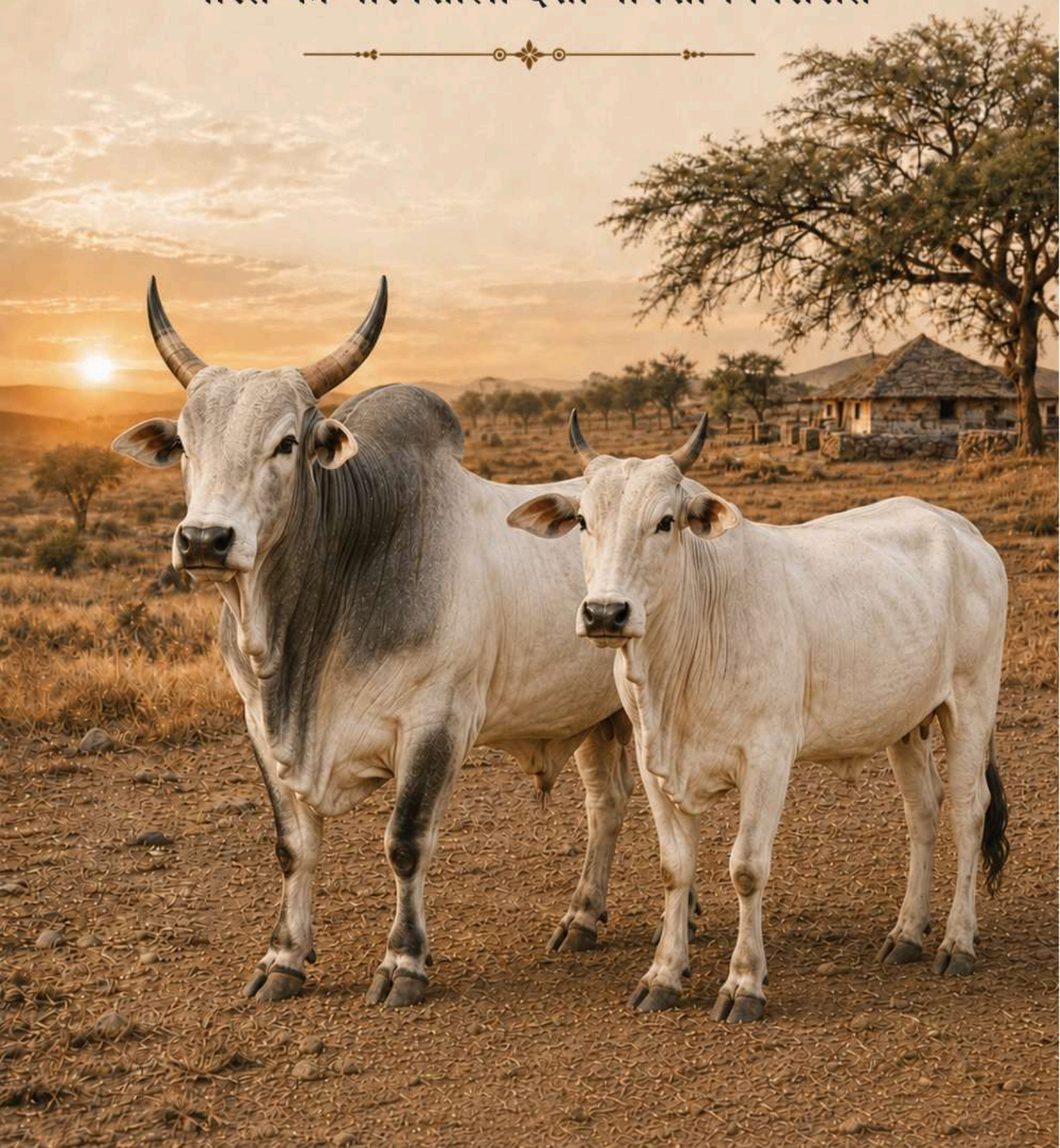

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

मालवी गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

प्रजनन क्षेत्र, प्रसार और दक्कन में उपयोग

जैसा कि नाम से संकेत मिलता है, मालवी गोवंश का मुख्य प्रजनन मालवा में होता था। बॉम्बे प्रेसीडेंसी की सीमाओं के भीतर इसका प्रजनन बहुत कम होता था, यद्यपि खानदेश, पंचमहल और अहमदाबाद के पूर्वी भाग में यह कभी-कभी मिलता था।

फिर भी कामकाजी गोवंश के रूप में इसे बड़ी संख्या में बॉम्बे प्रेसीडेंसी में आयात किया जाता था और बॉम्बे तथा प्रेसीडेंसी के अन्य नगरों में इसे काम करते हुए अक्सर देखा जाता था। दक्कन के संपन्न कृषक भी इसे बहुत महत्व देते थे और हेडी तथा वंजारी व्यापारियों से इस नस्ल के युवा नर पशु खरीदते थे।

ये युवा नर पशु बधिया नहीं किए गए होते थे और स्थानीय गायों से प्रजनन कर लेते थे। इसी कारण लेखक लिखता है कि अनेक क्षेत्रों में मालवी रक्त वाले स्थानीय पशु मिलना असामान्य नहीं था। मालवी मूलतः कार्यशील नस्ल है और अच्छी दुग्ध नस्ल नहीं मानी गई है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 41.

मालवा के मुख्य प्रजनन केंद्र

प्रजनन क्षेत्र तत्कालीन सेंट्रल इंडिया एजेंसी के भीतर बताया गया है। मोलिसन के उद्धृत विवरण के अनुसार सबसे अच्छे मालवी पशु शाजापुर जिले के नेवारी, सोनकास, टोंक और आगर में पाले जाने का विश्वास था। अन्य केंद्रों में जरदा, मानपुर, उज्जैन, जोगती, कालूखेड़ा, गौतमपुरा, तराना, दिचदोद, शाजापुर, आलोट, जावरा और अन्य छोटे गाँव शामिल थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 41.

वर्षा, भूमि, चराई और चारे की व्यवस्था

मोलिसन के अनुसार इन स्थानों में वर्षा लगभग 36–40 इंच (लगभग 914–1,016 मिमी) होती थी और बारहमासी जलधाराएँ उपलब्ध थीं। निचले भागों की मिट्टी काली और उपजाऊ थी। ऊपर की नीची पहाड़ियों पर पेड़ों की छाया में प्रथम श्रेणी की घास और चराई उपलब्ध थी।

चरागाह और घास के क्षेत्र विस्तृत थे। घास बड़ी मात्रा में काटकर सूखी घास बनाई जाती और गर्म मौसम में, जब अन्य चारा कम हो जाता, तब उपयोग के लिए सुरक्षित रखी जाती थी; इसे सभी मौसमों में रात के समय खिलाने के लिए भी रखा जाता था। मुख्य खेती वाली फसलों में ज्वार, मक्का और अलसी का उल्लेख है।

प्रजनन पशुओं को चरागाह से मिलने वाले भोजन के अतिरिक्त कोई विशेष आहार नहीं दिया जाता था; रात में उन्हें सूखी घास और कड़बी मिलती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 41; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

प्रजनक, झुंडों का आकार और पेशेवर गवली

प्रजनक स्वयं भी बड़े पैमाने पर कृषक थे। सामान्यतः वे बड़े झुंड नहीं रखते थे और बहुत कम लोगों के पास 12 से अधिक प्रजनन पशु होते थे। कुछ थोड़े प्रजनकों के पास बड़े झुंड, अधिकतम लगभग 200 पशु तक, मिलते थे; मोलिसन का कथन है कि लगभग हर भूमिधारी के पास कुछ पशु होते थे।

पेशेवर पशुपालकों में केवल गवली बताए गए हैं, जिनकी जीविका पशु-प्रजनन तथा दूध, घी और अन्य दुग्ध-पदार्थों की बिक्री पर निर्भर थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 41; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

मालवी बैल (MALVI BULL)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XIV

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुट के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	सींग की लंबाई Length of horn	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
51½ इंच / inches	46½ इंच / inches	12½ इंच / inches	8 इंच / inches	10 इंच / inches

मालवी गाय (MALVI COW)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XV

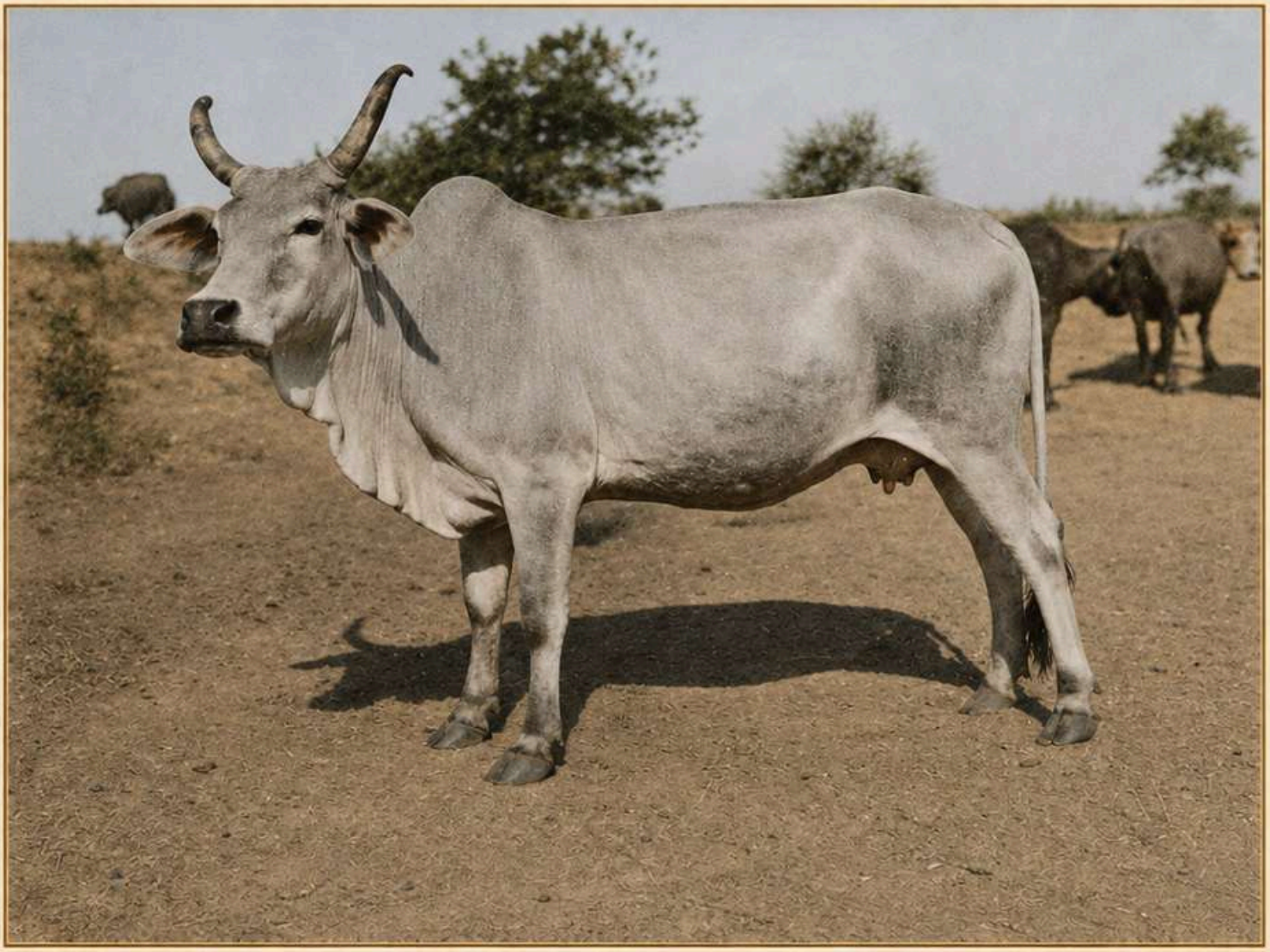

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुट के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	शरीर की लंबाई Length of body	शरीर का घेरा Girth	अगले पैर का घेरा Shank girth
50 इंच / inches	46 इंच / inches	50¼ इंच / inches	63¾ इंच / inches	5¼ इंच / inches

निचले पैर की लंबाई Length of shank	सींग की लंबाई Length of horn	चेहरे की लंबाई Length of face	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
6 इंच / inches	14½ इंच / inches	19½ इंच / inches	11 इंच / inches	10 इंच / inches

प्रजनन व्यवस्था और दैनिक रख-रखाव

सभी पशु एक साथ चराए जाते थे, इसलिए लेखक प्रजनन व्यवस्था को कम या अधिक अनियोजित बताता है। स्थानीय देवताओं को समर्पित अनेक 'पोल' सांड होते थे और ये सामान्यतः श्रेष्ठ श्रेणी के पशु होते थे। किंतु नर पशुओं को कम आयु में बधिया नहीं किया जाता था, इसलिए युवा सांड भी गायों से प्रजनन कर लेते थे।

दिन में पशु चरते थे। साफ मौसम में रात के समय उन्हें खुले बाड़ों में और वर्षा ऋतु में आश्रय के भीतर लाया जाता था। उन्हें बाँधकर नहीं रखा जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 22 | पीडीएफ पृ. 41.

शुद्धता, प्रकार की स्थिरता और रंग

इसके बाद हेवलेट, मोलिसन का विस्तृत वर्णन उद्धृत करता है। मोलिसन के अनुसार मालवी गोवंश बहुत लंबे समय से शुद्ध रूप में पाला जाता रहा था। यह अपने प्रकार के प्रति विशेष रूप से स्थिर था और उसमें कुछ ऐसे विशिष्ट लक्षण थे जिनसे उसकी रक्त-शुद्धता पर संदेह नहीं रहता था।

प्रमुख रंग शुद्ध सफेद था। धूसर या चाँदी-धूसर पशु भी सामान्य थे, किंतु टूटे हुए या मिश्रित रंग अज्ञात बताए गए हैं। धूसर या चाँदी-धूसर पशुओं में पैर, गर्दन और सिर सामान्यतः शरीर की तुलना में अधिक गहरे रंग के होते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

कार्य-क्षमता और सामान्य शरीर-रूप

मोलिसन मालवी को मूलतः कामकाजी गोवंश बताता है। यह मध्यम आकार का है और सामान्य प्रकार के लगभग हर काम के लिए अनुकूल माना गया है। पशु तेजस्वी, सक्रिय और शक्तिशाली बताए गए हैं तथा हल, गाड़ी और कुएँ से पानी खींचने—तीनों कार्यों में समान रूप से अच्छे माने गए हैं।

समग्र रूप सामान्यतः बहुत सुडौल है। शरीर चौड़ा और गहरा है, किंतु बहुत लंबा नहीं। पैर चौकोर ढंग से सही स्थिति में लगे, सुडौल और अच्छी चपटी हड्डियों वाले हैं; खुर गोल और कठोर हैं। पिछले भाग में हल्का ढलाव रहता है।

लिंगावरण पर अधिक ढीली त्वचा नहीं होती, लेकिन गर्दन और गलकम्बल की त्वचा अच्छी तरह विकसित होती है। कुकुद बड़ा है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

सिर, मुखाग्र, आँखें, कान और सींग

सिर और सींग नस्ल के अत्यंत विशिष्ट लक्षण हैं। मुखाग्र बड़ा और गहरा चमकदार काला है। आँखों की श्लेष्मा झिल्ली तथा आँख के गड्ढे के आसपास के बाल भी बिल्कुल काले होते हैं। मोलिसन इस लक्षण को शुद्ध मालवी की 'विशिष्ट पहचान' अर्थात विशिष्ट पहचान कहता है और लिखता है कि यह शुद्ध पशुओं में हमेशा मिलता है।

सिर छोटा है। आँखें गहरी, उभरी हुई और शांत भाव वाली हैं। कान छोटे हैं और उनमें नीचे लटकने की प्रवृत्ति बहुत कम या बिल्कुल नहीं है।

सींग भी बहुत विशिष्ट हैं। वे आधार पर मध्यम मोटाई के, उचित लंबाई के और सिरों पर नुकीले होते हैं। वे सिर से हमेशा आगे और ऊपर की दिशा में निकलते हैं तथा बाहर की ओर सुंदर वक्रता लेते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

सामान्य माप

पशु	कुकुद के पीछे ऊँचाई	छाती का घेरा
अच्छा मालवी बैल	47–55 इंच (लगभग 119.4–139.7 सेमी)	65–70 इंच (लगभग 165.1–177.8 सेमी)
मालवी गाय	45–50 इंच (लगभग 114.3–127.0 सेमी)	60–65 इंच (लगभग 152.4–165.1 सेमी)

मोलिसन अच्छे मालवी बैल के लिए कुकुद के पीछे 47–55 इंच ऊँचाई और 65–70 इंच छाती का घेरा देता है। गायें कुछ छोटी हैं; 45–50 इंच ऊँचाई और 60–65 इंच छाती का घेरा उचित औसत माप बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45.

मालवी बैल (MALVI BULLOCK)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XVI

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुट के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	शरीर की लंबाई Length of body	शरीर का घेरा Girth	अगले पैर का घेरा Shank girth
51¾ इंच / inches	47¾ इंच / inches	51¾ इंच / inches	65 इंच / inches	6¼ इंच / inches

निचले पैर की लंबाई Length of shank	सींग की लंबाई Length of horn	चेहरे की लंबाई Length of face	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
6 इंच / inches	12 इंच / inches	20¾ इंच / inches	7 इंच / inches	10 इंच / inches

दुग्ध-क्षमता और बछड़े को दूध देना

मालवी गायें अच्छी दुधारू नहीं बताई गई हैं। वे विरले ही प्रतिदिन 4–6 पाउंड (लगभग 1.8–2.7 किलोग्राम, भार के रूप में) से अधिक दूध देती थीं और अक्सर केवल 2–3 पाउंड (लगभग 0.9–1.4 किलोग्राम) प्रतिदिन देती थीं।

गायों का मूल्य मुख्यतः दुग्ध-क्षमता के आधार पर नहीं आँका जाता था, क्योंकि नस्ल मूलतः कार्य के लिए थी। गवली लोगों के पास सबसे अच्छी दूध देने वाली गायें बताई गई हैं। सामान्य कृषकों या दूसरे प्रजनकों की गायें प्रायः दुही ही नहीं जाती थीं और बछड़े को पूरा दूध चूसने दिया जाता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45.

प्रजनन आयु और बछड़ा देने की आवृत्ति

मोलिसन के अनुसार बछिया 3–4 वर्ष की आयु में प्रजनन योग्य होती थी। गाय सामान्यतः 3 वर्षों में 2 बछड़े देती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45.

साप्ताहिक बाजार और आगर के मेले

मालवा के अनेक साप्ताहिक बाजारों में मालवी गोवंश प्राप्त किया जा सकता था। पुस्तक में रतलाम, इंदौर, जावरा, मगाशी, खुर्जी, आलोट, गौतमपुरा, देलची, सिपरा, सीतामन, तराना, खरावा और मंडवी के साप्ताहिक बाजारों का उल्लेख है। आगर में समय-समय पर लगने वाले मेलों में इस नस्ल की बड़ी बिक्री होती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23 | पीडीएफ पृ. 45.

1912 में दर्ज कीमतें और युवा नर पशुओं का व्यापार

पशु/श्रेणी	मूल रिपोर्ट में दर्ज कीमत
अच्छी मालवी कामकाजी बैलों की जोड़ी	₹150–₹200
अच्छी मालवी गाय	₹30–₹40 या अधिक
निम्न श्रेणी की गाय	₹20–₹25
प्रजनन क्षेत्र में लगभग 3 वर्ष का युवा नर पशु	₹25–₹40 प्रति पशु
दक्कन में उसी युवा नर पशु का पुनर्विक्रय	₹50–₹75 प्रति पशु

हेडी और वंजारी व्यापारियों के बारे में कहा गया है कि वे स्थानीय प्रजनन क्षेत्रों में जाकर लगभग 3 वर्ष के युवा नर पशु ₹25–₹40 की कीमत पर खरीदते थे। फिर उन्हें झुंडों में दक्कन ले जाकर ₹50 या ₹75 प्रति पशु में दोबारा बेचते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 23–24 | पीडीएफ पृ. 45–46.

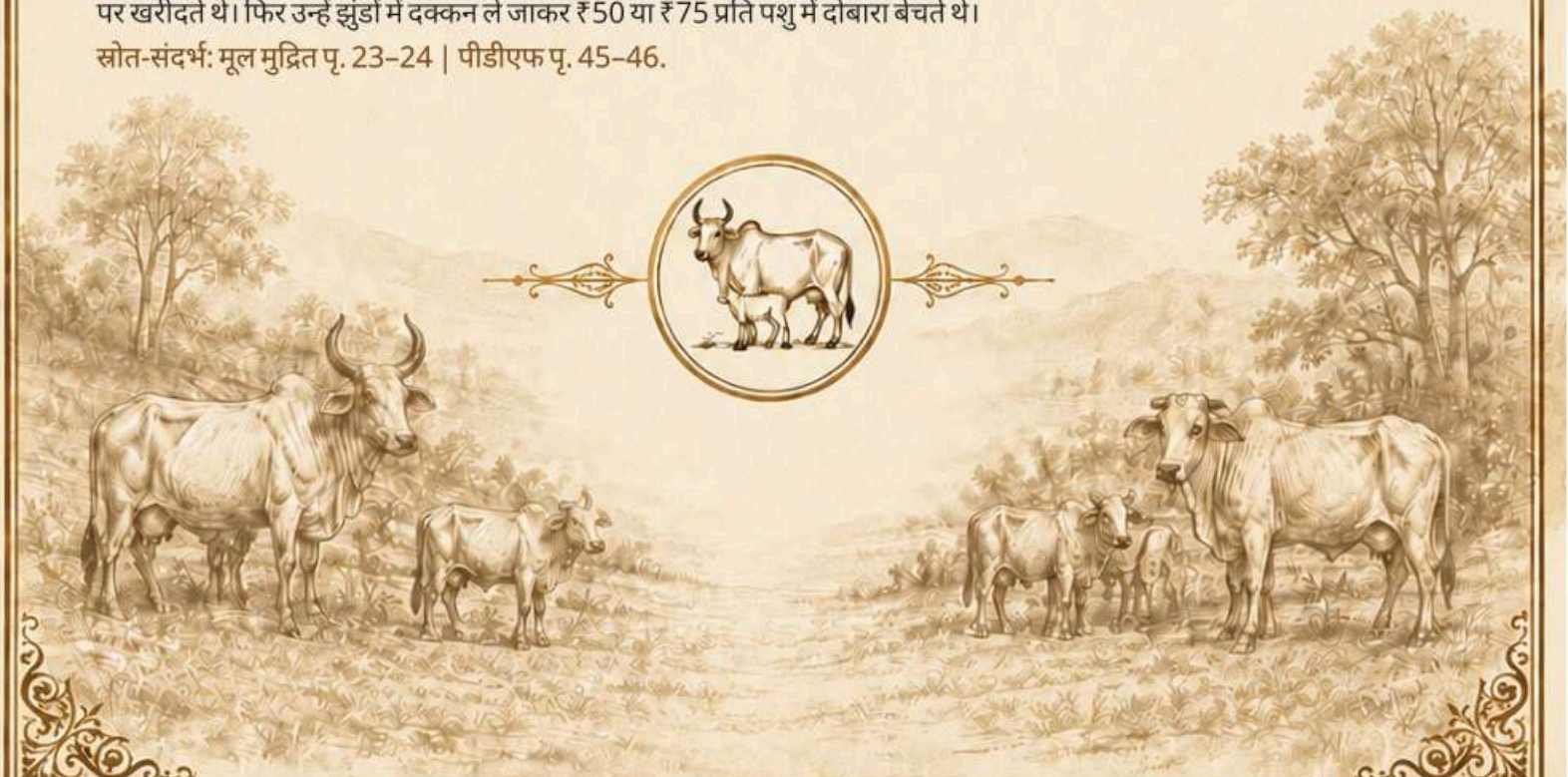

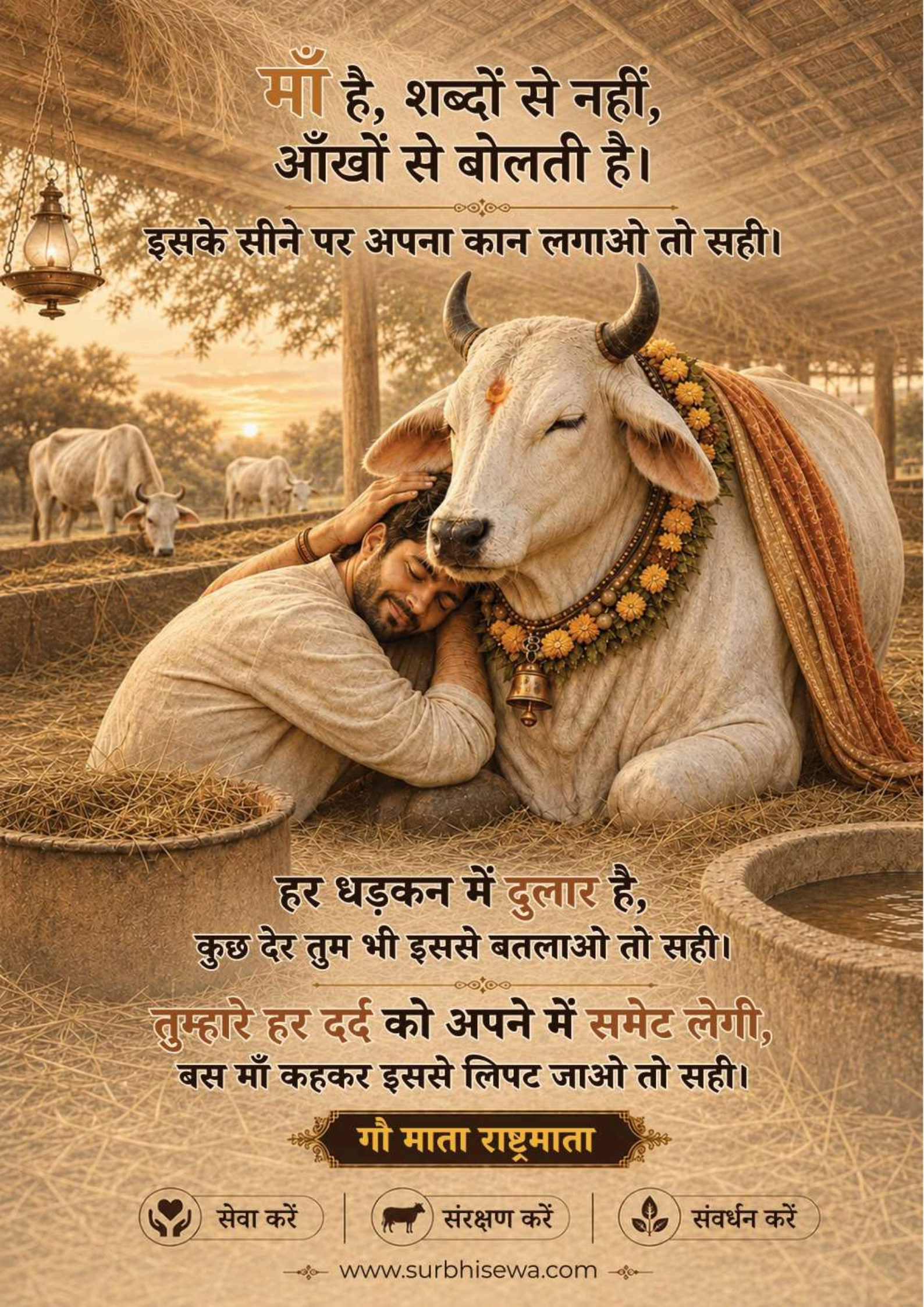
माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com